कामकाजी माताएँ और पारिवारिक सामंजस्य

*अरूणा जॉनसन, **डॉ. एल.एस. गजपाल

मानव सभ्यता के विकास के आरंभिक युग से ही घर और घर की जिम्मेदारियाँ महिलाओं का कार्य क्षेत्र रहा है। वैदिक युगीन सामाजिक, व्यवस्था से लेकर आज तक घर के अधिकांश कार्यों को महिलाएँ ही करती है। न केवल भारतीय समाज वरन पश्चिमी समाज भी पुरूष प्रधान समाज रहा है, जहाँ महिलाओं को अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता रहा है। उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों तक महिलाओं के लिए घर से बाहर कार्य के क्षेत्र नहीं खुली थी। 1891 में तात्कालिक ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने साफतौर पर कहा है कि–''महिलाओं को उद्योग में कार्य करने की अनुमति नहीं दी जा सकती, उनका कार्य केवल बच्चों की देखभाल तथा घरेलू कार्य करना है।'' कुछ इसी प्रकार की विचारधारा जर्मनी में भी प्रचलित रही है। इन सबके बाद भी महिलाएँ धीरे–धीरे विभिन्न शासकीय तथा निजी संस्थानों में विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियों को निभाना प्रारंभ किया, नई आर्थिक नीति तथा संवैधानिक प्रावधानों ने उनके लिए रोजगार के द्वारा खोल दिए और महिलाएँ शिक्षा, बैकिंग, शासकीय कार्यालयों में पूरी तरह छा गयीं। आज स्थिति यह है कि महिलाएँ सेना, औद्योगिक केन्द्र जैसे कठिन समझे जाने वाले क्षेत्रों में अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है। इन सबके बाद आज भी यह प्रश्न उठता है कि क्या परिवार (घर और बच्चों) की जिम्मेदारी केवल महिला की ही है ? प्रश्न का उत्तर हाँ में ही मिलेगा, क्योंकि समाज/परिवार कामकाजी होने के बाद भी उनसे यह अपेक्षा रखती हैं कि वे इन जिम्मेदारियों का भी भली–भांति निर्वहन करें परिणामतः एक कामकाजी महिला के सामने पहला प्रश्न होता है–भूमिका सामंजस्य का। प्रस्तुत अध्ययन भी रायपुर नगर के विभिन्न शासकीय संस्थानों (बैंक, डाकघर, विद्यालय) में कार्यरत कामकाजी महिलाओं पर आधारित है। जिसमें इस तथ्य को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि कामकाजी महिला के रूप में वे अपनी भूमिका को निभा पाने में कितना सफल रही है ? वे अपने कार्यों और परिवार के मध्य किस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर पाती हैं ? यह भी अध्ययन का मुख्य बिन्दु है।

किसी भी क्षेत्र में आज महिलाएँ पुरूषों से पीछे नहीं है, इस बात को महिलाओं ने ही समय के साथ सिध्द किया है। एक समय था जब चार दीवारी से उसका निकलना मुश्किल था, लेकिन शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ सामाजिक जागरूकता के चलते खुद उसने मर्यादा में रहकर उन दीवारों को तोड़ा जो उसके लिये अभिशाप बनी हुई थी। नए मूल्यों, नई परंपराओं, रीति–रिवाजों के आगे पुराने मूल्य और परंपराऐं फीकी पड़ गई। परिवर्तनशीलता के साथ न ही वह गूँगी गुड़िया रही, वरन् उसकी छवि अब बदल चुकी है। महिलाओं को लेकर समाज का नजरिया बदला है। वर्तमान में आर्थिक व सामाजिक स्तर सुधरा है। वर्तमान संदर्भ में महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। शिक्षा स्वास्थ्य, प्रशासन, खेल हर क्षेत्र में महिलाओं ने हर चुनौतियों को पार कर लिया है, सहनशीलता व धैर्य भावना से ओत–प्रोत अदम्य, साहस का परिचय समाज को देकर अपनी बुध्दिमता से परिवार को संचालन कर रही है और कामकाजी नौकरीपेशा महिला व माता, बहन, बेटी, बहु जीवन साथी के रूप में अपनी बुध्दिमता का लोहा मनवाने में पीछे नहीं है। महिलाओं को शिक्षा प्राप्ति के अवसर प्राप्त हुए, वे शिक्षित होने के साथ आत्मनिर्भर बनी आर्थिक, पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुसार उन्होंने हर वो क्षेत्र जहाँ केवल पुरूषों का वर्चस्व था, हर क्षेत्र में कदम बढ़ाया और आज विशेष रूप से वह कामकाजी महिला के रूप में आदर्श छबि निर्मित करके समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुए है।

अधिकांश कामकाजी महिलाओं के लिए नौकरी करना एक अनिवार्यता होती है। साथ ही व्यावसायिक गतिशीलता के सीमित अवसर भी। जब महिला व पुरूष एक ही तरह का कार्य करते है, तो उनमें तुलनात्मक अंतर यह पाया जाता है कि महिलाओं के हिस्से में जो काम आते हैं, वे पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा श्रम, ऊर्जा तथा समय की मांग करने वाले होते हैं। यदि कामकाजी माताओं का परिवार एकल परिवार है तो उन्हें पारिवारिक सामंजस्यता बनाये रखने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वे कठिन परिस्थितियों में कार्य करती हैं, साथ ही घरेलू जिम्मेदारियों का दायित्व निभाते हुए नौकरी की स्थायित्वता बनाए रखने के लिए मांग–पूर्ति के नियम पर कार्य करती हैं। मांग अर्थात् समय–जिसमें कार्यों का निर्वहन करना, पूर्ति अर्थात् कार्यों को उचित समय पर पूर्ण करना। इसके विपरित जहाँ संयुक्त परिवार है, जहाँ पारिवारिक सदस्य साथ रहने हैं, वहाँ कामकाजी महिला को घर व्यवस्थित, जीवन व्यवस्थित रखने में सहायता प्राप्त होती है और कार्यालय व पारिवारिक जीवन में सामंजस्य बैठाने में सहायता प्राप्त होती है और इसी व्यवस्था के कारण वह चिंतामुक्त व तनावरहित भी रहती है।

कामकाजी माताएँ और व्यवस्थित जीवन : घर, परिवार और कार्य में सामंजस्य :

आज की कामकाजी माताएँ स्वयं को ''अलफा वुमन'' की तरह व्यक्त कर रही हैं, अल्फा वुमन उनके उस रूप को दर्शाता है जो उनकी बदलती भूमिका से है, ये घर परिवार व कार्य दोनों मोर्चों पर मजबूती से डटी हुई हैं। घर व करियर का महत्व समझने वाली और दोनो किरदार को बेहतर तरीके से अंजाम देकर स्वयं आर्थिक रूप से मजबूत होती है। घर परिवार की प्राथमिकताओं पर नजर रखती है। आज की कामकाजी माताएँ दोनों परिस्थितियों से संघर्ष कर विभिन्न कार्यालयीन व पारिवारिक चुनौतियों का सामना कर अपनी संघर्ष क्षमता से आत्मविश्वास से दोनो परिस्थितियों में सामंजस्यता बनाए हुए है। आज की कामकाजी माताएँ वाकई सुपर वुमन है, उसके दिन की शुरूवात सुबह 6 बजे से होती है, अपने व्यस्त जटिल, चुनौतियों से भरे रोजमर्रा के घरेलू कार्य, कार्यालयीन कार्य, बच्चों के प्रति सचेत माँ, पति व बुजुर्गों की देखभाल, स्वयं के प्रति ध्यान रखकर पारिवारिक सामंजस्यता बनाए रखने में जुटी रहती है। सही मायनों में बहुआयामी कार्य करती है। मेहनत का भाद्दा और परिवार को खुशहाल बनाये रखते हुए यह नया समाजशास्त्र लिख रही है।

अध्ययन का उद्देश्य–अध्ययन विषय से संबंधित निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं, जो इस प्रकार हैः–

1. कामकाजी माताओं द्वारा दोनो कार्यक्षेत्रों, कार्यालय व पारिवारिक जीवन पर सामंजस्यता की स्थिति को ज्ञात करना।

2. नौकरी करने पर परिवार, पारिवारिक सदस्यों, पति व बच्चों से समर्थन, सहयोग प्राप्ति की स्थिति को ज्ञात करना।

3. कामकाजी माताओं के परिवार व कार्यालय जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों की स्थिति को ज्ञात करना।

*एम.फिल समाजशास्त्र अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
** व्याख्याता समाजशास्त्र अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

अध्ययन पद्धति–प्रस्तुत अध्ययन रायपुर नगर के विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत ''कामकाजी माताओं व बच्चों का विकास'' विषय पर अध्ययन किया गया है, जिसका मुख्य भाग कामकाजी माताएं और पारिवारिक सामंजस्य विषय पर भी अध्ययन सम्मिलित है। इस हेतु 120 कामकाजी माताओं का चयन किया गया, जिसमें उत्तरदाताओं के चुनाव हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची उपकरण रूप में ली गई है। प्रत्यक्ष सम्पर्क विधि एवं अवलोकन प्रविधि भी अध्ययन में सम्मिलित हैः–

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण–कामकाजी माताओं के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि संबंधी तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट होता है कि अध्ययनगत समूह में ज्यादातर कामकाजी माताएँ युवा वर्ग से हैं, जिनकी आयु 31–40 वर्ष के मध्य है। उत्तरदाताओं के शैक्षणिक दृष्टिकोण से ज्ञात होता है कि अधिकांश कामकाजी माताएँ उच्च शिक्षित है। जाति संबंधी विश्लेषण से स्पष्ट है (60.8 प्रतिशत) उत्तरदाता सामान्य वर्ग के हैं, जो अन्य जातीय सदस्यों की संख्या में अधिक है। व्यवसाय संबंधी प्राप्त तथ्यों से ज्ञात है कि 120 उत्तरदाताओं में सामान्यतः सभी नौकरी करते हैं, कामकाजी माताओं से प्राप्त जानकारी अनुसार सभी सरकारी सेवक के रूप में कार्यरत है। आय संबंधी प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट है कि अधिकांश कामकाजी माताओं की आय 6001 से 12000 रू. के मध्य है।

कामकाजी माताओं द्वारा परिवार व कार्यालय के मध्य सामंजस्यता विषय पर संकलित तथ्यों द्वारा ज्ञात होता है कि (86.6 प्रतिशत) उत्तरदाता माताएँ अपनी सूझबूझ व रोजमर्रा की दिनचर्या और समय का सही प्रबंधन कर सामंजस्य कर ही लेती है, जबकि (13.4 प्रतिशत) परिवार का सहयोग लेती है। घरेलू उत्तरदायित्वों के निर्वहन की स्थिति में स्पष्ट पाया गया कि अधिकांश (81.6 प्रतिशत) माताएँ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती है और कुछ नहीं कर पाती है। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग लेती है, स्वयं भी पूर्ण रूप से प्रयासरत रहती है। प्राप्त प्रतिशत संख्या द्वारा स्पष्ट है कि कामकाजी माताओं को परिवार द्वारा पूरा–पूरा समर्थन मिलता है। घरेलू कार्यों में विभाजन में प्राप्त जानकारी अनुसार पाया गया, संयुक्त परिवार में रहने वाली माताओं के घरों पर पारिवारिक सदस्य मिल–जुलकर कार्य करते हैं, जहाँ कामकाजी माताओं का परिवार एकांकी परिवार है, वहाँ वे पति, बच्चों व सर्वेण्ट की सहायता लेकर कार्यों को पूर्ण करती है। सहयोगात्मक प्रवृत्ति रखने संबंधी विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि परिवार के सदस्य पूर्णतः (94.2 प्रतिशत) सहयोगी प्रवृत्ति रखते हैं। घर संभालने में आने वाली कठिनाईयों के संबंध में ज्ञात हुआ कि उन्हें विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि दोनों कार्यक्षेत्रों में उन्हें जिम्मेदारी के साथ घरेलू कार्य भी करना पड़ता है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने उत्तर हाँ में प्रस्तुत किये हैं।

निष्कर्ष–सामाजिक और पारिवारिक अपेक्षाएँ कामकाजी माताओं से भी उतनी ही होती है, जितनी एक गृहणी से। यानि अच्छी नौकरी करना ही काफी नहीं उनसे एक परफेक्ट बहु, माँ होने की आशा भी की जाती है। यही नहीं उच्च शिक्षित और अधिक समझदार होने से उनसे अपेक्षाएँ और भी बढ़ जाती है। परिवार व कार्यालय के मध्य दोहरी भूमिका के कारण सामंजस्यता लाने में कठिनाईयों का सामना करती है, जहाँ संयुक्त परिवार की सदस्या होने से कुछ हद तक सहयोग, समर्थन, सहायता प्राप्त हो जाती है, इसके विपरित एकाकी परिवार होने से विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का सामना करती है, परन्तु समयानुसार हल निकाल लेती है एवं प्रयासरत रहती हैं।

तालिका क्रमांक – 01

कामकाजी माताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

आयु	शिक्षा	जाति	व्यवसाय	पद	मासिकआय (रू. में)
21–3030 (25:)	उच्चतर माध्यमिक 27 (22.5:)	सामान्य 73 (60.8:)	सेवारतस्कूल में30 (25:)	शिक्षिका70 (50.4:)	1001–600045 (37.5:)
31–4056 (46.7:)	डिप्लोमा8 (6.7:)	अन.जाति जनजाति	सेवारतस्कूल में 30 (25:) 26 (21.7:)	सहा.ग्रेड–333 (27.5:)	6001–1200062 (51.7:)
41–5024 (20:)	उच्च शिक्षा84 (70:)	अ.पि.व.14 (11.7:)	बैंक में सेवारत 30 (25:)	अधिकारी–313 (10.8:)	12001–1800011 (9.1:)
51–6010 (8.3:)	पी–एच.डी.01 (0.8:)	अल्प संख्यक समूह 07 (5.8:)	सेवारत स्कूल में 30 (25:)	अधिकारी–204 (3.3:)	18001 से 2000002 (1.7:)
120 (100:)	**120 (100:)**	**120 (100:)**	**120 (100:)**	**120 (100:)**	**120 (100:)**

तालिका क्रमांक – 02

कामकाजी माताओं द्वारा परिवार व कार्यालय के मध्य सामंजस्यता

सामंजस्य स्थापित	उत्तरदायित्व का निर्वहन	परिवार द्वारा समर्थन	घरेलू कार्यों का विभाजन	पा. सदस्यों की सहयोगी प्रवृत्ति	घर संभालने में आने वाली विभिन्न कर पाना कठिनाइयाँ
हां104 (86.6:)	हां98 (81.6:)	हां118 (98.3:)	हां85 (70.8:)	पूर्णतः सहयोगी113 (94.2:)	हां76 (63.3:)
नहीं16 (13.4:)	नहीं22 (18.4:)	नहीं02 (1.7:)	नहीं35 (29.2:)	कम सहयोगी07 (5.8:)	नहीं44 (36.7:)
120 (100:)	**120 (100:)**	**120 (100:)**	**120 (100:)**	**120 (100:)**	**120 (100:)**

संदर्भ :

1. नवभारत; दैनिक समाचार पत्र तथा उनमें साप्ताहिक प्रकाशित होने वाली पत्रिकाताओं से संकलित विषय सेस संबंधित सामग्री।
2. दैनिक भास्कर; समाचार पत्र व उनमें साप्ताहिक प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं से विषय संबंधित सामग्रियों का संकलन।
3. Johnson, Aruna; Working Mothers and Development of Children : A Sociological Study (In Raipur Corporation Area), Dissertation of M.Phil., Pt. R.S. University, Raipur, 2008.